Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 5

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

7 अप्रैल 2016 ई

28 जमादि उस्सानी 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपनी फ़जल नाज़िल करे। आमीन

हज़ारों आदमियों ने केवल इसलिए मेरी बैअत की कि ख़्वाब में उन्हें बतलाया गया कि यह सच्चा है और ख़ुदा से है और कुछ ने इसलिए बैअत की कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़्वाब में देखा और आपने फरमाया कि दुनिया खत्म होने को है और यह ख़ुदा का अंतिम ख़लीफा और मसीह मौऊद है। और कुछ निशान इस प्रकार के हैं जो कुछ बड़ों ने मेरे जन्म या बड़े होने से पहले मेरा नाम लेकर मेरे मसीह मौऊद होने की ख़बर दी जैसे नेअमतुल्लाह वली और मियां गुलाब शाह निवासी जमाल पुर ज़िला लुधियाना।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"अब मैं आयते करीमा وَاَمَّا بِنِعۡمَۃِ رَبِّکَ فَحَدِّثۡ के अनुसार अपनी तुलना बयान करता हूँ कि ख़ुदा तआला ने मुझे इस तीसरे स्तर में प्रवेश करके वह बरकत दी है कि मेरी कोशिश से नहीं बल्कि मां के पेट में ही मुझे दी गई है मेरे समर्थन में उसने वह निशान प्रकट करे हैं कि आज की तारीख से जो 16 जुलाई 1906 ई है। अगर मैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से गिनती करूं तो मैं ख़ुदा तआला की कसम खाकर कह सकता हूँ कि वह तीन लाख से भी अधिक हैं और अगर कोई मेरी कसम का विश्वास न करे तो मैं उसे सबूत दे सकता हूँ। कुछ निशान इस प्रकार के हैं जिनमें ख़ुदा तआला ने हर एक स्थान पर अपने वादे के अनुसार मुझे दुश्मनों की बुराई से सुरक्षित रखा। और कुछ निशान इस प्रकार के हैं जिन में प्रत्येक स्थान में अपने वादा के अनुसार मेरी ज़रूरतें और आवश्यकताएं उसने पूरी कीं और कुछ निशान इस प्रकार के हैं जिनमें उसने अपने वादा

اِنِّیۡ مُھِیۡنٌ مَنۡ اَرَادَ اِھَانَتَکَ

के अनुसार मेरे पर हमला करने वालों का अपमान और अनादर किया और कुछ निशान इस प्रकार के हैं जो मुझ पर मुकदमा दायर करने वालों में उसने अपनी पेशगोईयों के अनुसार मुझे विजय दी और कुछ निशान इस प्रकार है जो मेरी बेअसत की अवधि से पैदा होते हैं क्योंकि जब से दुनिया पैदा हुई है यह लम्बी अवधि तक किसी झूठे को नसीब नहीं हुई और कुछ निशान ज़माने की हालत देखने से पैदा होते हैं यानी यह कि ज़माना किसी इमाम के पैदा होने की जरूरत स्वीकार करता है और कुछ निशान इस प्रकार के हैं जिनमें दोस्तों के पक्ष में मेरी दुआएं कुबूल हुईं और कुछ निशान इस प्रकार जो दुष्ट दुश्मनों पर मेरी बददुआएं कबूल हुईं और कुछ निशान इस प्रकार है जो मेरी दुआ से कुछ खतरनाक बीमारों ने स्वस्थ पाया और उनके ठीक होने की पहले सो मुझे ख़बर दी गई। और कुछ निशान इस प्रकार हैं जो मेरे लिए और मेरी सच्चाई के लिए आम तौर पर ख़ुदा ने आसमान तथा ज़मीन से निशान दिखाया और कुछ निशान इस प्रकार के हैं जो मेरी पुष्टि के लिए बड़े-बड़े प्रमुख लोग जो प्रमुख सूफियों में से थे ख़वाबें आईं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़वाब में देखा जैसे सज्जादा नशीन साहब अलम सिंध जिनके मुरीद एक लाख के क़रीब थे और जैसे ख्वाजा ग़ुलाम फरीद साहिब चाचड़ां वाले और कुछ निशान इस तरह के हैं कि हज़ारों आदमियों ने केवल इसलिए मेरी बैअत की कि ख़वाब में उन्हें बतलाया गया कि यह सच्चा है और ख़ुदा से है और कुछ ने इसलिए बैअत की कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़वाब में देखा और आपने फरमाया कि दुनिया खत्म होने को है और यह ख़ुदा का अंतिम ख़लीफा और मसीह मौऊद है। और कुछ निशान इस प्रकार के हैं जो कुछ बड़ों ने मेरे जन्म या बड़े होने से पहले मेरा नाम लेकर मेरे मसीह मौऊद होने की ख़बर दी जैसे नेअमतुल्लाह वली और मियां गुलाब शाह निवासी जमालपुर ज़िला लुधियाना और कुछ निशान इस प्रकार के हैं जिनका दामन प्रत्येक क़ौम की तुलना में और प्रत्येक देश तक और हर एक ज़माने तक विस्तृत हो गया है और वह सिलसिला मुबाहला है जिस के कई नमूने दुनिया ने देख लिए* हैं और मैं बहुत देखने के बाद मुबाहला की रस्म को अपनी ओर से ख़त्म कर चुका हूं लेकिन हर कोई मुझे कज़्ज़ाब समझता है और हर एक मक्कार और मुफ़्तरी ख़याल करता है और मेरे दावा मसीह मौऊद के विषय में मेरा इनकार करने वाला है और जो कुछ मुझे ख़ुदा तआला की तरफ से वह्यी हुई उसे मेरा झूठ विचार करता है। वह चाहे मुसलमान कहलाता हो या हिंदू या आर्य या किसी और मज़हब का मानने वाला हो। इसे बहरहाल विकल्प है कि अपने तौर पर मुझे मुकाबले में रखकर लिखा हुआ मुबाहला प्रकाशित करे यानी ख़ुदा तआला के सामने यह स्वीकार कुछ अखबारों में प्रकाशित करे कि मैं ख़ुदा तआला की कसम खाकर कहता हूँ कि मुझे यह जानकारी पूर्ण रूप में प्राप्त है कि यह व्यक्ति (इस जगह वर्णन मेरा नाम लिखे) जो मसीह मौऊद होने का दावा करता है वास्तव में कज़्ज़ाब है और यह इल्हाम जिनमें से कुछ इस ने पुस्तक में लिखे हैं ये ख़ुदा के इल्हाम नहीं है बल्कि सब उसका झूठ है और मैं इसे दरअसल अपनी पूर्ण जानकारी और सही विचार के बाद और विश्वास के साथ मुफ़्तरी और कज़्ज़ाब और दज्जाल समझता हूँ। अत: हे सामर्थ्यवान खुदा अगर तेरे समीप यह व्यक्ति सादिक(सच्चा) है और कज़्ज़ाब और मुफ़्तरी और नास्तिक और धर्म विमुख नहीं है तो मेरे पर इस तक़ज़ीब और अपमान की वजह से कोई गंभीर अज़ाब नाज़िल कर वरना उस को अज़ाब में पीड़ित कर। आमीन

प्रत्येक के लिए कोई ताज़ा निशान पूछने के लिए यह दरवाज़ा खुला है और मैं स्वीकार करता हूँ कि अगर इस दुआऐ मुबाहला के बाद जो आम तौर पर प्रकाशित करना होगा और कम से कम तीन बड़े अख़बारों में दर्ज करना होगा ऐसा व्यक्ति जो इस वर्णन के साथ कसम खाकर मुबाहला करे और आसमानी अज़ाब से सुरक्षित रहे तो फिर मैं ख़ुदा से नहीं हूँ। इस मुबाहला में किसी समय सीमा की ज़रूरत नहीं है। यह शर्त है कि कोई ऐसी बात नाज़िल हो जिसे दिल महसूस कर लें।

* प्रत्येक इंसाफ करने वाला, मौलवी गुलाम दस्तगीर कसूरी की किताब को देखकर समझ सकता है कि कैसे उस ने अपने तौर पर मेरे साथ मुबाहला किया और अपनी किताब फ़ैज़ रहमानी में इसे प्रकाशित कर दिया और फिर मुबाहला से केवल कुछ दिनों बाद मर गया और कैसे चराग़ दीन जम्मू वाले ने अपने तौर से मुबाहला लिखा कि हम दोनों में से झूठे को ख़ुदा हलाक करे। और फिर से बस कुछ ही दिन बाद प्लेग से अपने दोनों लड़कों के साथ मारा गया। इस से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन, भाग 22, पृष्ठ 70-72)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

जुमअ: का महत्त्व तथा बरकतें

सप्ताह के सात दिनों में से एक दिन का नाम जुम्मा है। इस दिन एक मुसलमान मोमिन नहा धोकर साफ सुथरे कपड़े पहन कर और सुगन्ध लगा कर अल्लाह तआला की इबादत के लिए जमा होते हैं। जुम्मा का यह दिन मुस्लमानो के लिए ईद का दिन है। सामूहिक इबादत भी इस दिन होती है और दूसरे भाईयों से परिचय भी इस दिन बढ़ता है और आपसी प्रेम तथा समता का प्रदर्शन भी होता है। कौमी तथा सामूहिक आवश्यकताओं का ज्ञान प्राप्त होता है और ख़ुत्बा जुम्मा सुन कर लोग अल्लाह तआला का सानिध्य तथा प्रेम करते हैं

जुमअ: के दिन का इस्लाम में विशेष महत्त्व है। कुरआन में भी जुमअ: की नमाज अदा करने की ताकीद की गई है। निम्नलिखित सूरतों में शुक्रवार के दिन का महत्व समझाया है और मोमीनों को उसका विशेष एहतेमाम करने का आदेश दिया गया है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰﴾ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَ ابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۱﴾

'हे ईमान वालो जब जुमअ: की अज़ान पुकारें जाएं, अल्लाह के ज़िक्र की तैयारी करो और अपने व्यापार छोड़दो. यह तुम्हारे लिए बेहतर है और तुम तो जानते हो। और जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो ज़मीन पर फैल जाओ और अल्लाह की नेअमतें तलाश करो और अल्लाह को कसरत से याद करो ताकि तुम सफलता पाओ'' (सूर: जुम्अ: 9.10)

कुरआन कहता है कि जुमअ: की नमाज़ की अज़ान सुनते ही सभी दुनियावी काम और व्यापार वहीं छोड़कर जुमअ: की नमाज़ की तैयारी करनी चाहिए। जुमअ: की नमाज और अज़ान के बीच कोई दिनचर्या का सांसारिक काम न किया जाए ताकि इसकी तैयारी और व्यवस्था उस दिन की शान और फज़ीलतों और खुशी के साथ हो और जब नमाज़ पूरे दिल के साथ पढ़ ली जाए तो संसारिक कार्यों और व्यापार के लिए निकल जाएं और व्यापार और अन्य कार्यों के दौरान भी दिल ही दिल में अल्लाह का ज़िक्र करते रहें। इस में मोमिनो को व्यापार और संसारिक मामलों में सफलता की गारंटी है और भविष्य में भी इनाम का वादा किया गया है।

इस्लामी इतिहास की किताबों में शुक्रवार से संबंधित महत्त्वपूर्ण घटनाओं का ज़िक्र वर्णन हैं। उदाहरण के लिए आदम अलैहिस्सलाम इस दिन पैदा किए गए, इसी दिन उन्होंने स्वर्ग में प्रवेश किया, इसी दिन उन्हें स्वर्ग से निकाला गया और उसी दिन क़यामत होगी। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म जुमअ: को बड़े आयोजन से मनाते थे। इस दिन को मुसलमानों के लिए छोटी ईद करार दिया गया है। आप इस दिन नहाते, साफ वस्त्र पहनते , खुशबू और सुरमा लगाते।

जुमअ: की नमाज़ को हदीसों में बहुत महत्त्वपूर्ण बताया गया है। एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म ने फरमाया:

"जब शुक्रवार का दिन आता है मस्जिद के हर दरवाज़े पर फरिश्ते खड़े हो जाते हैं और आने वालों के नाम अनुक्रमिक लिखते हैं। जब इमाम बैठ जाते हैं तो रजिस्टर बंद कर दिया जाता है और वह ख़ुतबा सुनने के लिए बैठ जाते हैं।"

(मुस्लिम:1984)

हदीस में आता है कि जुमअ: के दिन क़ुबूलियत दुआ की एक विशेष घड़ी प्रकट होती है। इसलिए अधिक समय दुआओं में बिताना चाहिए।

हज़रत अबु हुरैरा फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म ने जुमअ: का उल्लेख किया और फरमाया।

इसमें एक ऐसी घड़ी आती है जिस मुसलमान को ऐसी घड़ी मिले और वह खड़ा नमाज़ पढ़ रहा हो तो जो दुआ मांगे वह स्वीकार की जाती है। आप ने हाथ के इशारे से बताया कि यह घड़ी बहुत ही कम होती है।

(सही मुस्लिम)

शुक्रवार के दिन दरूद शरीफ पढ़ने को भी बहुत महत्त्वपूर्ण बताया गया है। दरूद शरीफ पढ़ने की ताकीद अल्लाह तआला कुरान में भी करता है और इसके लिए कोई दिन और समय निश्चित नहीं है लेकिन शुक्रवार को बार बार दरूद और सलाम भेजने का आदेश है।

महदी और जुमअ:

इमाम महदी का नाम जुमअ: भी रखा गया है। इस में इस ओर इशारा है कि उसके द्वारा सारे संसार को एक धर्म पर जमा किया जाना लिखा है। इसलिए किताब "नजमुस्साक़िब" में शिया बज़ुर्गो के हवाले से लिखा है :.

'' जुमअ: इमाम महदी के मुबारक नामों में से है और इस नाम का एक कारण यह है कि आप लोगों को इकट्ठा करेंगे।"

हज़रत इमाम अली तक़ी ने फरमाया। दिन हम हैं। फिर फरमाया शुक्रवार मेरा बेटा है। (अर्थात आध्यात्मिक बेटा) और इसी की ओर हक़ वाले और सादिक़ लोग इकट्ठा करेंगे।

(नजमुस्साक़िब पृष्ठ 465 मिर्जा हुसैन नूरी तिबरी।)

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ फरमाते हैं :.

हमारा क़ायम अहले बैत अर्थात इमाम महदी जुमअ: के दिन निकलेगा।

(बिहारुल अनवार जिल्द 52 पृष्ठ 279 अल्लामा बाक़िर मज़लिसी। बेरूत 1983)

अत: हज़रत मसीह मौऊद 14 शव्वाल 1250 हिजरी को शुक्रवार के दिन पैदा हुए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"ये लोग जमा "बैयनस् सलातैन"(दो नमाजें एक साथ जमा करना) पर रोते हैं हालांकि मसीह के भाग्य में कई जमा रखे हैं। कसोफ व खसोफ का जमा होना यह भी मेरा ही निशान था और "वाइज़ान नफूसू ज़ोव्विजत" भी मेरे ही लिए हैं और आख़रीन मिनहुम लम्मा यलहूकूबैहिम भी एक जमा ही है क्योंकि पहले और आख़री को मिलाया गया है

(अलहकम 30 नवंबर 1902 ई। मुख्य पृष्ठ)

इमाम महदी का जुमअ: के दिन निकलने से अभिप्राय यह आख़री ज़माने में शुक्रवार के दिन से इमाम महदी का विशेष रूप से लाभ उठाना भी हो सकता है। जब समय के ख़लीफा का संदेश अर्थात ख़ुत्बा जुमअ: का शुक्रवार के दिन सारी दुनिया में कुछ सेकंड में प्रचारित हो जाना भी हो सकता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि शुक्रवार का दिन मुसलमानों के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसका महत्त्व कुरआन और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म के आदर्श से साबित है इसलिए इस दिन का विशेष सम्मान और व्यवस्था मुसलमानों पर वाजिब है।

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

दो नफलों की तहरीक

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस ने अपने ख़ुत्बा जुम्अ: 3 दिसम्बर 2010 ई. में अहबाब को प्रतिदिन कम से कम दो नफ़ल नमाज़ पढ़ने की तहरीक करते हुए फ़र्माया :-

"अत: इस अवस्था में मैं सारी दुनिया की जमाअतों को विशेष रूप से अपने पीड़ित कष्ट एवं मुश्किलों में फंसे भाईयों के लिए दुआओं की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ। कम से कम दो नफ़िल प्रतिदिन केवल इन लोगों के लिए हर अहमदी पढ़े जो अहमदियत के कारण से किसी भी प्रकार के कष्ट से पीड़ित हैं। जो अत्याचारी कानूनों के कारण अपने नागरिक एवं धार्मिक स्वतन्त्रता के अधिकार से वंचित कर दिए गए हैं। इसी प्रकार जमाअती उन्नति के लिए भी विशेष रूप से दुआएँ करें। अत: यदि प्रत्येक अहमदी अपने दिल की बेचैनी को ख़ुदा तआला के समक्ष पहले से बढ़कर प्रस्तुत करेगा तो स्वयं देखेगा कि अल्लाह तआला के प्यार की नज़र उस पर किस प्रकार पड़ रही है। पहले से बढ़ कर अल्लाह तआला उन को अपनी सुरक्षा में ले लेगा।"

(रोज़नामा अलफ़ज़ल रब्वा, 4 जनवरी 2011 ई.)

ख़ुत्बः जुमअः

यह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो की वर्णन की गई कुछ शिक्षाप्रद घटनाओं का वर्णन।

यह जायज़ तो है कि इंसाफ के लिए अदालत में आदमी जाए लेकिन अगर आपस में फैसले दोस्तों के माध्यम से हो सकते हैं मध्यस्थता के फैसले हो सकते हों। मिल बैठ कर हो सकता हो तो अदालतों में भी जाना नहीं चाहिए और फिर बेशर्मी भी नहीं दिखानी चाहिए।

हर इंसान का फर्ज़ है कि वे अपने मां बाप के साथ हुस्ने सलूक करे और उन के किसी हुक्म के ख़िलाफ न करे लेकिन बहुत ले नौजवान ऐसे हैं जो अपने मां बाप का उचित सम्मान नहीं करते और न उनके अधिकार का ध्यान रखते हैं।

कुरआन पर विचार और तदब्बुर करना चाहिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तफ़ासीर पढ़नी चाहिए फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने तफसीरें लिखी हैं वे पढ़नी चाहिए ख़लीफ़ाओं की व्याख्याएं हैं कुछ आयतों पर तफसीर है उन्हें देखना चाहिए। ख़ुद विचार करना चाहिए और कुरआन से ही ज्ञान और अनुभूति के बिंदु खोजने के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए।

ज्ञान के साथ व्यवहारिक तजुर्बा भी ज़रूरी है और दुनिया में इस का बहुत महत्तव है।

एक अहमदी होकर ईमान की ऐसी सूरत में हिफाज़त हो सकती है जब जमाअत के निज़ाम और ख़िलाफत से मज़बूत संबंध हो और नियमित संबंध हो और इस संबंध के लिए इन माध्यमों का उपयोग करने की ज़रूरत है, जिनमें से दूर बैठ कर भी वह संबंध रहे।

आजकल एम.टी. ए और इसी तरह alislam साइट जो है यह जमाअत की वेबसाइट यह बड़ा अच्छा माध्यम हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तब्लीग़ को भी पहुंचाने का माध्यम हैं और हर अहमदी तरबियत और ख़िलाफत से जोड़ने और जमाअत से जोड़ने का भी माध्यम हैं। परन्तु हर अहमदी का फर्ज़ है कि इसके साथ जुड़ने की कोशिश करें। अपने दोस्तों को भी इन का परिचय करवाना चाहिए।

इसलिए संबंध बनाने के लिए भी ऐसे लोगों को चुनना चाहिए जिनकी धार्मिक हालत अच्छी हो जो नमाज़ को नियमित अदा करने वाले हों और पाबन्द हूँ। इस संबंध में विशेष रूप से रबवा और कादियान के अहमदियों को ध्यान दिलाना चाहता हूं।

रबवा के नागरिकों को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए जो कमज़ोर हैं वे निर्बलों को प्रभावी करने के बजाय उन लोगों के प्रभाव लें जिनका जमाअत से मजबूत संबंध भी है और जो नमाज़ में भी नियमित हैं।

आदरणीय कमरुज़्ज़िया साहिब पुत्र आदरणीय मुहम्मद अली साहिब निवासी कोट अब्दुल मालिक ज़िला शेख़ुपुरा की शहादत। शहीद मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़याब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 4 मार्च 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

पिछले कुछ समय से कुछ जुम्ओं के ख़ुत्बों में मैंने कुछ कहावतें, हकायतें या कुछ कहानियां जो शिक्षाप्रद हैं जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से बयान फरमाई, बयान कीं। आज जब मैंने उन हिकायतों को वर्णन करने के लिए चुना तो मुझे ख्याल आया कि पाक व भारत की पुरानी कहानियों और परंपराएं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन की हैं इन परंपराओं का आज तक जारी रहना भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से ही है। अगर जमाअत के लिट्रेचर में यह न होतीं तो कभी की यह कहीं दफन हो चुकी होती और इस आधुनिक युग में उन्हें कोई जानता भी नहीं। आज इन बातों का कई भाषाओं में अनुवाद होता है। बहरहाल जैसा कि मैंने कहा, मैं यह देख रहा था। अत: इन परंपराओं को आज बयान करूंगा। यह सिर्फ कहानियां ही नहीं बल्कि कुछ वास्तविक घटनाऐं भी हैं। कुछ और उपदेश नसीहतें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी फरमाई हुई हैं। कई जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कुछ बातों की ओर ध्यान दिलाते हैं जो ज़ाहिर तौर पर तो लतीफे हैं लेकिन इन लतीफ़ों में भी सुधार का पहलू हमारे सामने आप प्रस्तुत कर देते हैं। ऐसा ही एक लतीफा है जो प्रस्तुत करता हूँ।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक मालिन का उदाहरण वर्णन किया करते थे। कहते कि उसकी दो लड़कियां थीं एक कमहारों के घर ब्याही हुई थी दूसरी मालियों के यहाँ। जब कभी बादल आता तो वह औरत दीवानी होकर घबराई हुई फिरती थी। लोग कहते थे क्या हो गया? वह कहती कि एक बेटी मेरी नहीं रही। क्यों ? अगर बारिश हो गई तो जो कुमहारों के यहाँ ब्याही हुई है वह नहीं रही, उन का कारोबार खत्म हो जाएगा। और अगर बारिश नहीं हुई तो जो मालियों के घर है वह नहीं रहेगी क्योंकि बारिश न होने के कारण उनकी सब्ज़ियां आदि नहीं उगेंगी । तो बहरहाल अगर हो गई तो कुमहारन के बर्तन ख़राब हो जाएंगे अगर न हुई तो सब्ज़ियों वाली की सब्ज़ी का नुकसान होगा।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 3 पृष्ठ 211)

तो ज़ाहिर में तो यह हल्की फुल्की बात है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उदाहरण इस बारे में वर्णन किया कि कादियान में दो आदमियों का आपस में मतभेद हो गया। दोस्तों ने समझाया लेकिन दोनों ने यही कहा कि नहीं हम ने अंग्रेज़ी अदालत में जाना है। वहीं से फैसला करवाना है और एक दूसरे पर सरकारी अदालत में मुकदमा कर दिया। जब मुकदमे की पेशी होती तो वह ख़ुद या उनका कोई प्रतिनिधि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में दुआ के लिए कहने आ जाता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते थे कि दोनों मेरे मुरीद हैं और उन से संबंध भी है किसके लिए दुआ करूं कि वह हारे और वह जीते। मैं तो यही दुआ करता हूँ कि जो सच्चा है वह जीत जाए।

आजकल भी यही हाल है कि जब अहमदी एक दूसरे पर क़ज़ा में या अदालत में केस करते हैं तो दुआ के लिए भी साथ लिख देते हैं। तो ऐसी दुआ के लिए कहना ऐसा ही है जैसे बारिश होने या न होने का मामला है। या तो कुमहारों में ब्याही हुई लड़की को नुकसान पहुंचेगा या मालियों में ब्याही हुई लड़की को नुकसान पहुंचेगा। किसी न किसी को नुकसान उठाना है। यहाँ यह भी स्पष्ट कर दूं कि इस उदाहरण से कोई यह न समझ ले कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में अगर मुक़दमा बाज़ी होती थी तो आज भी अगर हो रही है तो इसमें कोई हर्ज नहीं, यह जायज़ है। यह जायज़ तो है कि इंसाफ के लिए अदालत में आदमी जाए लेकिन अगर आपस में फैसले दोस्तों के माध्यम से हो सकते हैं, मध्यस्थता के फैसले हो सकते हों, मिल बैठ कर हो सकते हों तो अदालतों में भी नहीं जाना चाहिए और फिर बेशर्मी भी नहीं दिखानी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी नमूने को पसंद नहीं फरमाया था। तो ज़िद जो है यह कोई अच्छी बात नहीं है। इसलिए इस ज़िद से भी बचना चाहिए और फिर दुआ के लिए कह के इमाम को भी मुश्किल से बचाना चाहिए क्योंकि अगर दोनों ही पक्ष अहमदी हूँ तो किसके लिए दुआ करे और किसके लिए नहीं करे और वही दुआ है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं करता हूँ कि अल्लाह तआला जिस का हक बनता है उसे दे दे।

फिर अल्लाह तआला ने एक हुकुम की ओर, एक बात की तरफ हमें ध्यान दिलाया और वह यह कि माता पिता की इज़्ज़त करनी चाहिए। सिवाय धर्म के मामले के ख़ुदा तआला के हुक्मों के मामले के माता पिता के हुक्म का पालन करना चाहिए उनके हक अदा करने चाहिए। जब धर्म की बात आए तो बेशक यह कहा जा सकता है कि सम्मान तो आपका करता हूँ लेकिन क्योंकि ख़ुदा तआला का मामला है इसलिए यह बात मानना मेरे लिए मुश्किल है मेरी मजबूरी है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हर इंसान का फर्ज़ है कि वह अपने माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार करे और उनके किसी आदेश का उल्लंघन न करे लेकिन कई युवा ऐसे हैं जो अपने माता-पिता का उचित सम्मान नहीं करते और न उनके अधिकारों का ध्यान रखते हैं बल्कि बच्चों में से अगर कोई किसी को अच्छा उहदा मिल जाए तो वह अपने ग़रीब माता-पिता से मिलने में भी शर्म महसूस करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सुनाया करते थे कि किसी हिंदू ने बड़ी तकलीफ बर्दाशत करके अपने लड़के को बी.ए और एम.ए करवाया और इस डिग्री प्राप्त करने के बाद वह डिप्टी हो गया। सिविल सेवा में चला गया। उस समय डिप्टी होना बड़ा सम्मान था यद्यपि आज के ज़माने में कोई बड़ा सम्मान नहीं माना जाता। उसके बाप को एक दिन ख्याल आया कि मेरा लड़का डिप्टी हो गया है। मैं भी मिल आऊँ तो जब वह हिन्दू अपने बेटे को मिलने के लिए मज्लिस में पहुंचा तो उस समय उसके पास वकील और बैरिस्टर आदि बैठे हुए थे। यह भी अपनी गंदी धोती के साथ एक ओर बैठ गया। बातें होती रहीं। किसी आदमी को इस आदमी का बैठना बुरा लगा और उसने पूछा कि हमारी मज्लिस में यह कौन बैठा है? तो डिप्टी साहिब उसकी बात सुन कर झेंप गए और शर्मिंदगी से बचने के लिए कहने लगे कि यह हमारे टहलिया हैं यानी खिलाने वाले हैं। बाप अपने बेटे की यह बात सुनकर गुस्सा के साथ जल गया और अपनी चादर संभालते हुए उठ खड़ा हुआ और कहने लगा। जनाब उनका टहलिया नहीं उसकी माँ का टहलिया हों। साथ वालों को जब मालूम हुआ कि यह डिप्टी साहिब के पिता हैं तो उन्होंने उस की बड़ी निन्दा की कि अगर हमें पहले बता देते तो हम उचित सम्मान व तकरीम करते। अदब(शिष्टाचार) के साथ उन्हें बिठाते। बहरहाल इस प्रकार के नज़ारे देखने में आते हैं कि अगर रिश्तेदार ग़रीब हों तो लोग रिश्तेदारों के साथ मिलने से जी चुराते हैं। चाहे बाप है या कोई और रिश्तेदार है ताकि उनकी ऊंची हालत में कोई कमी न आए। मानो माता पिता का सम्मान या और दूसरे रिश्ते जिनका सम्मान करना चाहिए उन से लोग बचते हैं और फिर बजाय माता-पिता का नाम रोशन करें यह तो अलग रहा उनके नाम को बट्टा लगाने वाले बन जाते हैं।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 7 पृष्ठ 593)

एक बार हज़रत मुस्लेह मौऊद यह लेख ज़िक्र कर रहे थे कि लोग कुछ उल्मा या वक्ताओं की तकरीर केवल कुछ समय मज़ा लेने की आदत अनुसार सुनते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस बारे में यही फरमाया हुआ है कि मज्लिसों में केवल इसलिए न आओ कि अमुक तकरीर करने वाला अच्छा है। इस की तकरीर सुननी है बल्कि यह देखो कि इस मज्लिस में क्या बात हो रही है और इस से क्या फायदा उठाया जा सकता है। तो बहरहाल कुछ लोग न तक़रीर करने वाले की बात की गहराई को, न तकरीर को समझ रहे होते हैं, न इसका उद्देश्य उन्हें समझ आ रहा है । केवल कुछ वक्त के मज़े के लिए बैठे हैं। इसी तरह कुछ वक्ता भी केवल अस्थायी भावनात्मक हालत बनाने के लिए बड़ी ज़ोरदार तक़रीर करते हैं या करने की कोशिश करते हैं और बड़ी अलग आवाज़ें निकालते हैं। बनावटी तरह से रिक्कत भी तारी करने की कोशिश करते हैं। तो ऐसे ही एक ख़तीब का ज़िक्र करते हुए आप फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक ख़तीब का वर्णन सुनाते थे कि वह तक़रीर के लिए खड़ा हुआ और उस का मज़मून बड़ा रिक्कत वाला था। एक आदमी आया और खड़ा हो गया। जमींदार आदमी था। हाथ में उसके तरनगड़ी थी। (यह जमींदारों की एक चीज़ होती है। तीन डंडी से होते हैं। इस का दस्ता लंबा होता है जो भूसा आदि लेने के लिए, तूड़ी उठाने के लिए इस्तेमाल होता है। जब आधुनिक प्रौद्योगिकी आई है तो इससे पहले पुराने ज़माने में तो यहां पश्चिमी देशों में भी यह उपयोग होता था) लेकिन बहरहाल गांवों से आकर खड़ा हो गया तक़रीर सुनने के लिए। जितने लोग वहाँ बैठे थे, उन पर तो इस तक़रीर का असर न हुआ लेकिन वह ज़मींदार थोड़ी ही देर बाद रोने लग गया। तो तक़रीर करने वाला जो वाइज़ (उपदेशक) था उस की शामत आई और उसके दिल में दिखावा पैदा हुआ तो उसने सोचा कि यह मेरी तक़रीर से प्रभावित हो गया। इसने लोगों को संबोधित कर के कहा कि देखो इंसानों के दिल भी कई प्रकार के होते हैं। एक वे तुम लोग हो जो घंटों से मेरी तक़रीर सुन रहे हो लेकिन तुम पर ज़रा असर नहीं हुआ। मगर यह एक अल्लाह का बंदा है उस पर तुरंत असर हो गया थोड़ी देर के लिए आया है खड़ा हुआ है और यह रो पड़ा। फिर उसने लोगों को बताने के लिए कि देखो कितना असर हुआ है उससे पूछा कि मियां किस बात ने तुम पर असर क्या है कि तुम रो पड़े हो।(इसे सही तरह जमींदार लोग ही समझ सकते हैं जो पुराने हैं।) वह कहने लगा कि कल इसी तरह मेरी भैंस का बच्चा अड़ा अड़ा कर मर गया था। जब मैंने आप की आवाज़ सुनी तो वह याद आ गया और मैं रो पड़ा। तो यह सुनकर ख़तीब साहिब बहुत शर्मिन्दा हुए।

(ख़ुत्बाते महमूद भाग 6 पृष्ठ 137)

मानो उस आदमी की भावनाएं तो उभरीं लेकिन ख़तीब के ज़ोरदार आवाज़ में बोलने और कई बार रिक्कत की कोशिश में अपने गले से अजीब आवाज़ निकालने की वजह से उसको अपनी भैंस का बच्चा जो गले से अजीब आवाज़ निकालते हुए मरा था, वह याद आ गया। तो ख़तीब बेचारे को अपने ख़िताब की ग़लत फहमी हो गई थी कि शायद मेरी जो रिक्कत भरी तक़रीर है यह सुनकर यह रो पड़ा है तो वह उसके दिखावे ने, उसकी बनावट ने तुरंत दूर कर दी। हमारे ख़िलाफ जो मौलवी बोलते हैं अगर कभी उनकी तक़रीरें सुनें तो बस आवाज़ें आ रही होती हैं। बहरहाल यह तो उन लोगों का काम है, खासकर जब उन्हें अहमदियत के ख़िलाफ बोलने का जोश आता है जो लोग पाकिस्तान में रहते हैं या पाकिस्तान से इन दिनों में आए हैं उन्हें पता होगा, जिन्होंने उनकी तकरीर सुनी होंगी कि किस तरह की और कैसी तकरीरें उनकी होती हैं।

अल्लाह तआला का यह हम पर एहसान है कि हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफीक मिली वरना इस्लाम के नाम पर पीरों ने भी जो दोकानदारियाँ चमकाई हुई हैं हम भी शायद इन्हीं का हिस्सा होते। दावे तो पीर लोग यह करते हैं कि बड़े पहुंचे हुए लोग हैं। यह कहते हैं कि अपनी हम दुआओं से अपनी ज़रूरतों को पूरा कर लेते हैं। हमें किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआला से हमारा बड़ा क़रीबी रिश्ता है और दुनिया से पूरी तरह बे-रग़बती है लेकिन उनके काम क्या हैं। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक आदमी के बारे में फ़रमाते हैं कि वह अपने आप को विशेष दर्जा तक पहुंचा हुआ समझता था मगर एक बार एक मुरीद के यहां गया और जाकर कहा लाओ मेरा टैक्स यानी मुझे नज़राना दो। अकाल का मौसम था मुरीद ने कहा कि कुछ नहीं है। इस बार माफ कर दो। पीर साहब बहुत देर तक लड़ते झगड़ते रहे और आख़िर कोई चीज़ उसकी बिकवाई कोई चीज़ उसे बेचनी पड़ी और फिर रुपया लेकर उसकी जान छोड़ी। तो इस प्रकार की कमज़ोरियां और गंद इन लोगों में देखे जाते हैं जो बड़े-बड़े दावे करते हैं कि हम बड़े पहुंचे हुए हैं।

(उद्धरित ज़िक्रे इलाही अन्वारुल उलूम भाग 3 पृष्ठ 494-495)

और यह उस ज़माने की कोई पुरानी बातें नहीं। आज भी पाकिस्तान आदि देशों में ऐसे पीर हैं। कुरआन में जो ज्ञान और अनुभूति का वर्णन हुआ है। इस में हर ज्ञान का ज़िक्र किया है और यह और बात है कि अक्सर हमारा कम ज्ञान और कम विचार तथा तदब्बुर(चिन्तन) के कारण इसकी गहराई तक नहीं पहुँच सकते। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि मुझे याद है एक बार हज़रत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम ने कहा चिकित्सा के सभी सिद्धांत कुरआन में वर्णित हैं और दुनिया के सभी रोगों का इलाज कुरआन करीम में मौजूद है। आप फरमाते हैं कि हो सकता है मुझे इस तरह कुरआन पर विचार करने का अवसर ही न मिला हो और संभव है मेरा इरफान अब तक इस हद तक न पहुंचा हो मगर बहरहाल जितना भी ज्ञान है अपना ज्ञान और अपने बड़ों का अनुभव मिलाकर मैं कह सकता हूँ कि कुरआन से बाहर हमें किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 13 पृष्ठ 503)

इसलिए कुरआन पर विचार और तदब्बुर चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तफसीर पढ़नी चाहिए। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने भी तफसीरें लिखी हैं। वे पढ़नी चाहिए ख़लीफ़ाओं की कुछ आयतों पर व्याख्याएं हैं, तफसीरें हैं उन्हें देखना चाहिए। ख़ुद विचार करना चाहिए और कुरआन से ही ज्ञान और अनुभूति के बिंदु खोजने के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए।

कुछ लोगों का विचार होता है कि हम ने ज्ञान हासिल कर लिया और यह बहुत है और किसी भी चीज़ की हमें ज़रूरत नहीं। किसी तजुर्बे की हमें ज़रूरत नहीं। किसी दूसरे से सलाह लेने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन यह महत्त्वपूर्ण याद रखने वाली बात है कि ज्ञान के साथ अनुभव की आवश्यकता होती है। अगर कोई आदमी सिर्फ किताब पढ़कर डाक्टर बनना चाहे तो बहुत मुश्किल है, बड़ा कठिन है। जैसे चिकित्सा की पुस्तकें हैं उन्हें पढ़ने के साथ योग्य चिकित्सक के सामने रोगियों का चेकअप और इलाज किया हो। अगर एक चिकित्सक है जब किताबें पढ़ ले तो किसी विशेषज्ञ के सामने रोगियों का चेकअप और इलाज भी करता हो। इसलिए डॉक्टरों को जब कॉलेजों में पढ़ाया जाता है तो उनको विशेषज्ञ डॉक्टरों के साथ प्रैक्टिकल भी हो रहे होते हैं। अगर यह न हो तो अनुभव नहीं होता और इंसान कुछ सीख नहीं सकता लेकिन इसके बाद भी अनुभव की ज़रूरत होती है सिर्फ यही नहीं कि पढ़ाई के दौरान अनुभव प्राप्त कर लिया। बहरहाल किसी चिकित्सक का चिकित्सा का ज्ञान तभी पूर्ण होगा जब वह अमल भी करेगा। बिना काम के ज्ञान उपयोगी नहीं होता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसी ज्ञान और अमल के बारे में सुनाते थे कि एक डाक्टर था जो बहुत बड़ा विद्वान था। उसने चिकित्सा का ख़ूब अध्ययन किया था। ज्ञान प्राप्त किया हुआ था। बहुत पढ़ा था। उसने रणजीत सिंह की मशहूरी सुनी तो दिल्ली से इसके दरबार में पहुंचा कि शायद तरक्की हासिल हो। रणजीत सिंह का वज़ीर एक मुसलमान था। उसने इस से मुलाकात की और महाराजा से मिलने के लिए सिफारिश चाही यानी वैद्य ने मुस्लिम वज़ीर से मुलाकात की और कहा कि मेरी सिफारिश करो कि मैं राजा से मिल सकूँ। मंत्री को अंदेशा हुआ कि उसका सम्मान होगा तो मैं कहीं गिर न जाऊं और चिकित्सक की सिफारिश न करना भी उसने अदब (शिष्टाचार) के ख़िलाफ समझा। कुछ वह डाक्टर साहब की बातों से समझ भी गया था कि उनका व्यावहारिक अनुभव तो कुछ नहीं लेकिन बहरहाल ज्ञान बहुत है। महाराजा रणजीत सिंह से उसने सिफारिश की और कहा कि हुज़ूर यह बहुत बड़े आलिम हैं। फलां किताब पढ़ी हुई है और इस मुस्लिम वज़ीर ने हकीम के ज्ञान की बहुत प्रशंसा की। महाराजा ने पूछा कि यह बताओ कि किसी का इलाज भी किया है, अनुभव प्राप्त किया है? वज़ीर ने कहा कि अनुभव भी हुज़ूर के द्वारा हो जाएगा। आप पर तजुर्बा कर लेंगे। रणजीत सिंह बड़ा बुद्धिमान आदमी था। वह समझ गया कि ज्ञान बिना अमल के कुछ नहीं कहा कि अनुभव के लिए क्या ग़रीब रणजीत सिंह ही रह गया है। बेहतर है कि हकीम साहब को इनाम देकर विदा कर दिया जाए।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 7 पृष्ठ 18-19)

तो ज्ञान के साथ व्यावहारिक अनुभव भी महत्त्वपूर्ण है और दुनिया में इसका बड़ा महत्त्व है। किसी भी क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करने के बाद अगर व्यावहारिक अनुभव प्राप्त न किया जाए तो कई अवसर ऐसे आते हैं जहां काम करते समय आदमी को पता नहीं लगता कि आगे क्या करना है। हाथ-पैर फूल जाते हैं और ज्ञान के बावजूद जो समस्याएँ सामने होती हैं, जो रोक होती है वह दूर नहीं हो सकती। तो अगर केवल ज्ञान प्राप्त करके आदमी अपने आप को किसी क्षेत्र का विशेषज्ञ समझने लग जाए तो उसे रणजीत सिंह वाला जवाब मिलेगा।

जमाअत की सामान्य तरक्की के लिए भी यह बहुत महत्त्वपूर्ण है और इस का बहुत महत्त्व है कि युवा आधुनिक ज्ञान जब हासिल करते है तो उस का अधिक अनुभव भी हासिल करें और अपने ज्ञान को अनुभवी लोगों के साथ मिलाकर फिर जमाअत की तरक्की के लिए भी उपयोग करें। बहुत से सुझाव लोग देते हैं। नई तकनीक है इसको इस्तेमाल करना है तो कई बार ज्ञान की हद तक तो ठीक है लेकिन कई समस्याएं ऐसी होती हैं जिन्हें दूर करना होगा या फिर ऐसी रोकें सामने आ सकती हैं जिन पर विचार करना ज़रूरी होता है और अनुभवी लोग बता सकते हैं।

एक अहमदी होकर ईमान की ऐसे रूप में हिफाज़त हो सकती है जब जमाअत के निज़ाम और ख़िलाफत से मज़बूत संबंध हो और नियमित संबंध हो और इस संबंध के लिए इन माध्यमों को उपयोग करने की ज़रूरत है, जिन में से दूर बैठ कर भी वह संबंध स्थापित रहे। हज़रत मुस्लेह मौऊद इस बात का वर्णन करते हुए एक जगह फरमाते हैं कि जमाअत के मामलों में लोग कभी तरक्की नहीं कर सकते बल्कि कभी ज़िन्दा नहीं रह सकते जब तक उनका जड़ से संबंध न हो और इस समय यह संबंध बनाने का अच्छा माध्यम अख़बार हैं। आदमी कहीं भी बैठा हो अगर उसे सिलसिले के अख़बार पहुंचते रहें तो ऐसा ही होता है जैसे पास बैठा है। उसका ऐसी ही उदाहरण है जैसे अभी बोल रहा हूँ। अब इस वक्त बयान फरमाते हैं आप को लगता है कि औरतों का जलसा हो रहा है, जलसे की तक़रीर है। औरतें लाऊड स्पीकर पर तक़रीर सुन रही हैं। अगर लाऊड स्पीकर के माध्यम से उन तक आवाज़ नहीं जा रही होती तो उन्हें कुछ पता नहीं होता कि क्या बोल रहे हैं। तो लाऊड स्पीकर ने औरतों को मेरी तक़रीर के क़रीब कर दिया है। यहाँ भी अब लाऊड स्पीकर के माध्यम से, औरतों के हॉल में भी आवाज़ जा रही है और वह भी सुन रही हैं। यह भी एक निकटता है।

इसी तरह अख़बार दूर रहने वालों को क़ौम से जोड़े रखते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमेशा कहा करते थे कि अलहकम और बदर हमारे दो हाथ हैं। यद्यपि कई बार यह अख़बार ऐसी ख़बरें भी प्रकाशित कर देते थे जो हानिकारक होती थीं मगर चूंकि उनके लाभ उनके नुकसान से ज्यादा थे। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि हम ऐसा महसूस करते हैं जैसे यह दो अख़बार हमारे दो हाथ हैं। दो हाथ होने के यही अर्थ हैं इनके द्वारा हमारा जो हाथ है यानी जमाअत वह हम से मिली हुई है। फिर आप फरमाते हैं कि उस ज़माने में, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में, हमारे अख़बारों की तरफ दोस्तों का बहुत ध्यान हुआ करता था हालांकि जमाअत इस समय आज से दसवां या बीसवां हिस्सा थी और अब तो सौवाँ या हज़ारवां हिस्सा है। इसलिए बदर की ख़रीदारी एक ज़माने में उस समय चौदह पंद्रह सौ रह चुकी थी। इस के बाद फिर कम होती रही। इसी तरह अलहकम की संख्या भी बढ़ी। जमाअत के दोस्त उस ज़माने में अक्सर अख़बार ख़रीदते थे बल्कि जो पढ़े लिखे नहीं थे कई बार वह भी ख़रीदते थे और दूसरों को पढ़ने के लिए दे देते थे और समझते थे कि यह भी तब्लीग़ का एक साधन है(मिसरी साहिब के ख़िलाफत से हटने के बारे में तकरीर अन्वारुल उलूम भाग 14 पृष्ठ 544-545) बल्कि एक अहमदी यक्का चलाने वाले थे, पढ़े लिखे नहीं थे। वह अलहकम मंगवा कर रख लेते थे और अपनी सवारियां जब टांगे पर ले जाते थे तो सवारी की शक्ल देख कर पहचान लेते थे कि यह शरीफ़ है और उसे कोई अख़बार देकर कहते थे कि यह अख़बार आया है ज़रा मुझे पढ़कर सुनाना और इस तरह कई बार जब सवारी अपनी मंज़िल पर पहुंचने के बाद उतरती थी तो अख़बार का नाम पता नोट कर लेते थे और इस तरह जमाअत के संपर्क में आते थे और फिर बैअतें होती थीं। उस वक्त लोग कहा करते थे उन्होंने अपने क्षेत्र में बावजूद अनपढ़ होने और टांगा चलाने के सबसे ज्यादा बैअतें करवाईं। इस ज़माने में तो और भी आसानियां अल्लाह तआला ने हमारे लिए पैदा फरमा दी हैं। एक तो अपनी तरबीयत और ख़िलाफत से मज़बूत संबंध के लिए हर अहमदी को एम.टी.ए देखने की ज़रूरत है। इसकी आदत डालनी चाहिए दूसरे तब्लीग़ के लिए जो एम.टी.ए और वेब साइट के प्रोग्राम हैं वे भी दूसरों को बताने चाहिए। अपने दोस्तों के साथ बैठे कई बार मौका मिलता है देखने चाहिए। दोस्तों को उनका परिचय कराना चाहिए। बहुत सारे ख़त मुझे अब भी आते हैं कि जब से हम ने एम.टी.ए पर कम से कम ख़ुत्बा जुम्आ ही नियमित सुनना शुरू किए हैं। हमारा जमाअत से मज़बूत संबंध हो रहा है। हमारे ईमानों में मज़बूती पैदा हो रही है। तो आजकल एम.टी. ए और इसी तरह alislam की जो साइट है। यह जमाअत की वेबसाइट है। यह बड़ा अच्छा माध्यम हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तब्लीग़ को भी पहुंचाने का माध्यम हैं और हर अहमदी की तरबियत और ख़िलाफत से जोड़ने और जमाअत से जोड़ने का भी माध्यम हैं। अत: हर अहमदी का फर्ज़ है कि इसके साथ जुड़ने की कोशिश करें।

कुछ लोग सोच तो यह रखते हैं कि उनका सुधार हो और इस्लामी आदेश का पालन करने वाले हों, खासकर नमाज़ के बारे में यह इच्छा रखते हैं कि नियमित नमाज़ पढ़ने वाले हों लेकिन फिर ऐसे लोगों की सुहबत (संगत) में चले जाते हैं जो सुस्त हैं और नतीजे में वे बावजूद इच्छा के वे ख़ुद भी सुस्त हो जाते हैं। यह प्रभाव

बिना सोचे दिल पर पड़ रहा होता है। इसलिए संबंध बनाने के लिए भी ऐसे लोगों को चुनना चाहिए जिनकी धार्मिक हालत अच्छी हो जो नमाज़ को नियमित अदा करने वाले हों और पाबन्द हूँ। इस संबंध में विशेष रूप से रबवा और कादियान के अहमदियों को ध्यान दिलाना चाहता हूं जहां थोड़ी सी जगह में अहमदियों की बड़ी संख्या है। इसी तरह मस्जिदें भी थोड़ी-थोड़ी दूरी पर हैं वहाँ कि मस्जिदों को आबाद करें। इसी तरह बहुत से ऐसे लोग जमाअत के निज़ाम के बारे में ग़लत सोच रखते हैं उनसे भी बचने की कोशिश करें। कई बार बाहर से लोग जाते हैं वह इस विषय में मुझे लिखते भी हैं शिकायत भी लिखते हैं कि रबवा में भी नमाज़ के इंतज़ाम की तरफ ध्यान देने की ज़रूरत है। इसलिए रबवा के नागरिकों को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। जो कमज़ोर हैं वे कमज़ोरों का असर लेने के बजाय उन लोगों के प्रभाव लें जिनका जमाअत से मजबूत संबंध भी है और जो नमाज़ में भी नियमित हैं। इसका उदाहरण देते हुए कैसे असर होता है और बुद्धिमान कैसे समझ जाता है कि मुझ पर दूसरे का असर हो रहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि एक बार जालीनोस एक जगह खड़ा था। एक पागल दौड़ता हुआ आया और आकर उसे चिमट गया। जब जालीनोस ने उसे छोड़ा तो उसने कहा मेरा फसद निकलवाओ यानी खून निकलवाओ। इस पर लोगों ने पूछा कि फसद क्यों खुलवाते हैं। कहने लगा कि यह दीवाना जो आकर मुझ से चिमट गया है ऐसा लगता है कि मुझ में कोई जुनून की नस है। यह दूसरों को छोड़कर मुझ से आ चिमटा है। ऐसा मालूम होता है कि मेरे अंदर जुनून की कोई नस है जिस से इस दीवाने को समता हुई और वह मेरी ओर खिंचा आया। तो मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि ऐसे लोगों के पीछे झुकना जो नमाज़ी नहीं हैं उनके पीछे चलना जो नमाज़ में सुस्त हैं, यह बताता है कि उन्हें भी सुस्त लोगों से सम्बन्ध है।

(ख़ुत्बाते महमूद भाग 9 पृष्ठ 348, 349)

तो सामान्य रूप से हर जगह ही हर अहमदी को सुस्त लोगों से तुलना रखने के बजाय चुस्त लोगों से, active लोगों से, जमाअत के सक्रिय लोगों से सम्बन्ध रखना चाहिए। उन से सम्बन्ध रखना चाहिए और जब यह सम्बन्ध स्थापित हो जाए और चुस्त लोगों की संख्या में वृद्धि होती जाएगी तो धीमे भी चुस्त हो जाएंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मज्लिस में एक बार एक आदमी आया और कहने लगा कि मैं मोजज़ा (चमत्कार) देखना चाहता हूँ। अगर मुझे फलां मोजज़ा दिखा दिया जाए तो मैं आप पर ईमान लाने के लिए तैयार हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि मुझे याद है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया कि अल्लाह तआला मदारी नहीं। वह कोई तमाशा नहीं दिखाता बल्कि उसका हर काम ज्ञान से होता है। तुम बताओ कि चमत्कार पहले दिखाए गए थे उन से तुम ने क्या फायदा उठाया है कि आप के लिए अब कोई नया चमत्कार दिखाया जाए मगर मानव स्वभाव की कमज़ोरी इस को भी नापसंद करती है बल्कि शायद उसे बद तहज़ीबी करार देती है। वह जायज़ समझती है कि सुस्ती और उपेक्षा में ग्रस्त चली जाए बल्कि सुस्ती और लापरवाही में हमेशा पड़ी रहे और कोई उसे इतना भी सवाल न करे कि उसने अपनी ज़िम्मेदारी को किस हद तक अदा किया है। हां जब वह कोई तमाशा देखना चाहे उस वक्त उसे तमाशा अवश्य दिखा दिया जाए।

(उद्धरित तहरीक जदीद एक क़तरा है, अन्वारूल उलूम भाग 14 पृष्ठ348-349)

यह मानव स्वभाव है। यह आदत ज़िद्दी इंसानों की हमेशा से है कि न मानना हो तो शैतान के नक्शे कदम पर चलते हैं। सारे नबियों से यही सवाल होते रहे हैं यहां तक कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से भी न मानने वालों ने ऐसी ही मांग की थी कि सोने के घर का निशान दिखाएं। आसमान पर चढ़ने का निशान दिखाऐं और फिर यही नहीं बल्कि आसमान से हमारे सामने किताब भी ले आएं और इस तरह की बेहूदा बातें और आरोप थे। इसलिए अल्लाह तआला इन बेहूदा मांगों को कोई महत्त्व नहीं देता और न उसके नबी देते हैं। अनगिनत निशान हैं अगर मानना हो तो नेक फितरतों के लिए वही काफी होते हैं।

कुछ लोगों ने तहरीक जदीद पर कुछ आपत्ति की कि यह क्या नई योजना शुरू कर दी है। इसका जवाब देते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद ने एक स्थान पर फरमाया कि दरअसल मेरी तहरीक कोई आधुनिक तहरीक नहीं बल्कि यह प्राचीन तहरीक है और इस आधुनिक शब्द से न केवल उनके असंवेदनशील और बीमार दिमाग़ से मिलाप किया गया है जो बिना किसी आधुनिक के बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होते। जिस तरह डॉक्टर जब एक मरीज़ का लंबे समय तक इलाज करता रहता है तो बीमार कई बार कहता है कि मुझे इन दवाओं से लाभ नहीं होता। तब वह कहता है अच्छा आज तुम्हें नई दवा दे देता हूँ यह कह कर वह पहली दवा में कुछ और मिला देता है। जैसे उस समय आप उदाहरण दिया कि टिंकचर कारडिंगम (Tincture Cardamom) मिलाकर ख़ुशबूदार बनाता है और रोगी समझता है कि यह नई दवा मुझे मिल गई और डॉक्टर भी उसे नई दवा कहने में ठीक होता है क्योंकि दवा में वह एक नई दवा मिलाई होती है मगर वह इसलिए उसे आधुनिक बनाता है ताकि मरीज़ दवा पीता रहे और इसकी उम्मीद न टूटे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास एक बार एक बुढ़िया आई उसे मलेरिया बुख़ार था, जो उतर नहीं रहा लंबा हो गया था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे कहा कि तुम कोनीन खाया करो। वह कहने लगी कुनीन ? तो अगर कुनीन गोली का चौथा हिस्सा भी खा लूँ तो हफ्ता हफ्ता बुख़ार की तेज़ी से फूंकती रहती हूँ। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने देखा कि वह कुनीन खाने के लिए तैयार नहीं हैं क्योंकि आमतौर पर हमारे देश में कुनीन को कौनीन कहते हैं जिसका अर्थ दो जहानों के होते हैं यानी दो जहान इस लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे खाने को तो कुनीन दी, गोलियां दीं। मगर कहा इस दारैन (दोनों जहान) की गोलियाँ हैं, इन्हें इस्तेमाल करो। कोनीन और दारैन दो जहान ही हैं स्पष्ट हो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह नहीं कहा था यह कुनीन नहीं है। इसका नया नाम रख दिया। दो तीन गोलियां ही उसने खाई होंगी कि आ कर कहने लगी कि मुझे तो इस दवा से ठंड पड़ गई है कुछ और गोलियां दें। पहले तो वह कहती थी कि आधी गोली खा लूँ, चौथा हिस्सा खा लूँ, तो बुखार नहीं उतरता। गर्मी हो जाती है या नाम बदलने से ही ठंड पड़ गई। आप फरमाते हैं कि मैंने भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरह पुरानी तहरीक का नाम आधुनिक रख दिया। और तुम ने कहना शुरू कर दिया कि यह आधुनिक तहरीक है। वे लोग जिनके अंदर ईमानदारी थी वे चाहते थे कि रूहानियत में तरक्की करें। उन्होंने जब एक तहरीक का नया नाम सुना तो उन्होंने कहा कि यह नई बात है आओ हम इस से लाभ उठाएं और वे लोग जिनके अंदर मुनाफकत थी उन्होंने यह समझ कर कि यह नई बात है कहना शुरू कर दिया कि अब यह नई नई बातें निकाल रहे हैं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तरीके से विचलित कर रहे हैं। न उसने बात समझने की कोशिश की और न उसने फायदा उठाया।

(उद्धरित अन्वारुल उलूम भाग 14 पृष्ठ 230-231)

इसलिए यह एक कानून है जो हमेशा निर्धारित है। आदम के समय से आज तक जब शैतान तुम पर हमला करे तो तुम्हें इस से बचने के लिए तरकीबें निकालनी पड़ेंगी और शैतान से बचने और धर्म के काम में तरक्की के लिए जब भी कोई तरकीब निकाली जाए तो वास्तव में वह इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए होती है जिसके लिए नबी आए और जिसके लिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आए और जिसके लिए इस समय आपके सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए। किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए और जमाअत की समग्र तरक्की के लिए ज़िम्मेदार लोगों को लगातार और पीछे पड़ कर कोशिश करने की ज़रूरत है चाहे वह तरबियत का काम हो या कोई और काम हो।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एक भिखारी था जो अक्सर उस कमरे के सामने जहां पहले मुहासिब का दफतर था, बैठा करता था। जब उसे कोई आदमी अहमदिया जमाअत से आता हुआ दिखाई देता तो कहता कि एक रुपया दे दो। जब आने वाले कुछ कदम आगे आ जाता तो कहता अठन्नी ही सही। यद्यपि जब वह कुछ और आगे आता तो कहता चवन्नी ही सही। जब इस के मुकाबले पर आ जाता तो कहता दो आना ही दे दो। जब उसके पास से दो कदम आगे चला जाता तो कहता एक आना ही सही। यद्यपि जब कुछ और आगे चला जाता तो कहता एक पैसा ही दे दो। जब कुछ और आगे चला जाता तो कहता धीलह ही सही। जब जाने वाला उस मोड़ के पास पहुंचता जहां मस्जिद अक्सा की तरफ मुड़ते हैं तो कहता कि पकौड़े ही दे दो। जब देखता कि अंतिम नुक्कड़ पर पहुँच गया है तो कहता मिर्च ही दे दो। वह रुपए से शुरू होता और मिर्च पर ख़त्म करता। इसी तरह काम करने वालों को भी यही समझना चाहिए कि कुछ न कुछ तो हमारे हाथ आ जाए तो पहली बार सौ में से एक की ओर ध्यान देगा तो अगली बार दो हो जाएंगे इससे अगली बार चार हो जाएंगे और इस तरह धीरे-धीरे बढ़ते जाएंगे। तो काम करो और फिर नतीजा देखें। जब सांसारिक काम बे-नतीजा नहीं होते तो कैसे समझ लिया जाए कि नैतिक और रूहानी काम बिना परिणाम हो सकते हैं, लेकिन जिनके मन ठीक न हों वे कह देते हैं कि हम तो काम करते हैं लेकिन नतीजा अल्लाह तआला के हाथ में है। "नतीजा अल्लाह तआला के हाथ में है कहने से उनका यह मतलब होता है कि हम ने तो अपनी तरफ से पूरी मेहनत की

थी लेकिन अल्लाह तआला ने हम से दुश्मनी निकाल ली। यह कहना कितनी मूर्खता और बेफकूफी है। मानो अपनी कमज़ोरियों और कमियों को अल्लाह तआला की ओर ज़िम्मेदार ठहरा देते हैं। अल्लाह तआला का यह कानून है कि जो काम हम करते हैं उसका कोई न कोई परिणाम निर्धारित होता है, लेकिन अच्छे या बुरे परिणाम की निर्भरता हमारे अपने काम पर होती है। किसी आदमी ने 1/10 भाग के लिए कड़ी मेहनत की है तो कानून कुदरत यही है कि 1/10 भाग नतीजा निकलेगा। अब उसके 1/10 भाग निकलने का यह अर्थ नहीं कि अल्लाह तआला के कानून कुदरत के कारण 1/10 हिस्सा परिणाम होगा वरना वह मेहनत तो अधिक थी। कानून कुदरत किसी की मेहनत को बर्बाद नहीं करता लेकिन शरारती ख़ुद कहता है कि मैंने तो अपना कर्तव्य निभा दिया था लेकिन अल्लाह मियां ने अपना फर्ज़ अदा नहीं किया और भूल गया इससे बड़ा कुफ्र और क्या हो सकता है। इसलिए जहां तक मेहनत और कोशिश का सवाल है परिणाम हमारे ही हाथ में हैं और अगर परिणाम अच्छा नहीं निकलता तो समझ लो कि हमारे काम में कोई त्रुटि रह गई है। कोशिश करनी चाहिए कि हर काम के परिणाम किसी निश्चित रूप में हमारे सामने आ सकें और जब तक यह परिणाम सामने न आएं हमें आराम से नहीं बैठना चाहिए।

(उद्धरित अन्वारुल उलूम भाग 18 पृष्ठ 201,202)

कुछ लोग लिखते हैं कि हम ने बड़ी इबादत की, बड़ी दुआएं कीं, हमें हमारे लक्ष्य हासिल नहीं हो सके। हमारी दुआएं कुबूल नहीं हुईं। तो उन्हें भी समझ लेना चाहिए कि या तो जिस हद तक जाना चाहिए वहाँ तक नहीं पहुंचे या फिर उन्होंने मंजिल तो निर्धारित कर ली लेकिन रास्ता ग़लत ले लिया। इसलिए इस पर एक दुआ करने वाले को विचार करना चाहिए कि रास्ता भी सही हो और जो जितनी मेहनत चाहिए वह भी ज़रूरी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि कीमिया गर (कीमिया बनाने वाला) जब विफल होता है तो कहता है कि एक इंच कसर रह गई मानो वह रसायन बनाने से निराश नहीं होता बल्कि अपनी कोशिश की त्रुटि करार देता है हालांकि रसायन गिरी में उम्मीद की गुंजाइश ही नहीं और ख़ुदा तआला के साथ संबंध बढ़ाने और उसके निकटता की तो पूरी उम्मीद है मगर रसायन गर जिसकी सारी उम्र ही एक इंच कसर में गुज़र जाती है वह तो बावजूद हर बार की विफलता से निराश नहीं होता लेकिन वह आदमी जो ख़ुदा तआला के निकट होना चाहे सफल नहीं होता तो अपने कार्य प्रणालियों की त्रुटि करार नहीं देता बल्कि ख़ुदा तआला से निराश हो कर तुरंत निराश हो जाता है और अपनी सारी कोशिशें छोड़ बैठता है तो रसायन गिरी करने वाला तो ग़लती को अपनी ओर संबन्धित करता है और सोना बनने के विचार को सुनिश्चित समझता है लेकिन ख़ुदा को पाने की कोशिश करने वाला अपनी ग़लती के लिए ख़ुदा को ज़िम्मेदार ठहराता है और उसे छोड़ देता है।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 11 पृष्ठ 60)

आजकल रिसर्च करने वालों का भी यही हाल है। सालों एक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनुसंधान करते हैं। वर्षों लगाते हैं और फिर सालों बाद जा कर कहीं सफलता मिलती है और वह भी ज़रूरी नहीं है कि जिस रास्ते को एक बार अपनाया हो उसी को धारण करें। विभिन्न प्रयोगों में अलग ढंग बदलते रहते हैं। इसलिए रूहानियत को हासिल करने और ख़ुदा तआला की नज़दीकी और दुआओं की कुबूलियत के लिए भी अपने तरीके को देखने की ज़रूरत है। अपने सुधार की ज़रूरत है और इस की समीक्षा की ज़रूरत है। कैसे सुधार कर रहे हैं। इस के लिए अपने नफ्स को टटोलने की ज़रूरत है। अपनी इबादतों को देखने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला के सभी आदेशों का पालन करने की ज़रूरत है। अपने हर प्रकार के कामों को देखने की ज़रूरत है कि किस प्रकार हमारे काम हैं। अपनी सोचों और अक्ल के सुधार की आवश्यकता है। जब ख़ुदा तआला ने कहा कि मैं अपने बन्दों के पास हूं और फिर अगर वह करीब नहीं आता, दुआएं नहीं सुनी जातीं तो कहीं न कहीं किसी जगह हमारी कोशिशों और हालतों में कमी है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद फरमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाया करते थे कि मांगने वाले दो किस्म के होते हैं एक "नर गदा" और दूसरा "ख़र गदा" नर गदा वह होता है जो किसी के दरवाजे पर आवाज़ देता है कि कुछ दो। अगर किसी ने कुछ डाल दिया नहीं तो दो तीन आवाज़ें देकर आगे चले गए। मगर ख़र गदा वह होता है कि जब तक न मिले टलता नहीं। इस प्रकार के मांगने वाले लिए बिना पीछा नहीं छोड़ते और ऐसे मांगने वाले बहुत थोड़े हैं। मुझे याद है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास आकर एक आदमी बैठा करता था। वह नहीं उठता था जब तक कुछ ले नहीं लेता। वह बैठा रहता था जब तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बाहर न निकलते और उसे कुछ दे नहीं देते। फिर कई बार वह रकम निर्धारित कर देता कि इतनी लेनी है और अगर हज़रत साहिब इस से कम देते तो वह हरगिज़ न लेता। कई बार ऐसा हुआ कि मेहमान उसे इतनी रकम पूरी कर देते थे कि चला जाए। कहते हैं कि मैंने देखा कि अगर उसके मुंह से कोई रकम निकल गई कि यह लेनी है और वह पूरी न होती तो वह जाता नहीं था। जब तक रकम पूरी न कर दी जाती और अगर हज़रत साहिब बीमार होते तो तब तक न जाता जब तक स्वस्थ होकर आप बाहर न आते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि दुआ की कुबूलियत के लिए यह ज़रूरी है कि आदमी ख़र गदा बने और मांगता चला जाए और ख़ुदा के सामने धूनी रमा कर बैठ जाए और टले नहीं जब तक कि ख़ुदा का काम यह साबित न कर दे कि अब इस बारे में दुआ न की जाए।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 10 पृष्ठ 200)

ख़ुदा का कार्य कि अब इस बारे में दुआ न की जाए कई तरह से है। एक औरत जैसे गर्भावस्था में है आजकल विज्ञान के अनुसार यह पता चल जाता है कि लड़की पैदा हो रही है या लड़का पैदा और अंतिम समय में आकर बिल्कुल पता चल जाता है तो यह कहना कि अब लड़का ही हो यह ख़ुदा तआला के काम के ख़िलाफ है। वह तो जन्म का अंतिम समय है। हां अगले गर्भावस्था के लिए यह दुआ स्वीकार हो सकती है कि आगामी गर्भावस्था में फिर अल्लाह तआला लड़का दे या कभी ख़ुदा की इच्छा खोल दी जाए फिर भी आदमी दुआ करता रहे तो यह भी ग़लत है। यह बेअदबी बन जाती है लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि कभी कोशिश को भी नहीं छोड़ना। उपाय भी दुआ के साथ आवश्यक है। उपाय और दुआ निरन्तर करते रहना अल्लाह तआला के फज़्लों को खींचता है। उपाय का दुआ के साथ होना भी बहुत ज़रूरी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते थे कि उपाय का दुआ के साथ न होना बिल्कुल ग़लत बात है और ऐसे आदमी की दुआ उसके मुंह पर मारी जाती है जो सिर्फ दुआ करता हो और उपाय न करता हो। जो उपाय और दुआ को साथ नहीं रखता उसकी दुआ नहीं सुनी जाती क्योंकि दुआ के साथ उपाय का न करना ख़ुदा तआला के कानून को तोड़ना और उस की परीक्षा लेना है। और ख़ुदा तआला की यह शान नहीं कि बन्दा उस का इम्तिहान लें। अल्लाह तआला हमें निरन्तर और अपनी हालतों को अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार बनाते हुए और सभी बाहरी पहलू अपनाते हुए दुआओं की तौफीक प्रदान करे।

नमाज़ के बाद एक नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। जो शहीद का नमाज़ जनाज़ा है। आदरणीय क़मरुल ज़िया साहिब पुत्र आदरणीय मुहम्मद अली साहिब निवासी कोट अब्दुल मालिक ज़िला शेख़ूपुरा को विरोधियों ने एक मार्च 2016 ई को दोपहर क़रीब डेढ़ बजे उनके घर के बाहर चाकू के वार कर के शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। घटना के दिन शहीद मरहूम कमरुल ज़िया साहिब घर से लगी अपनी दुकान बंद करके अपने बच्चों को स्कूल से लेने के लिए घर से निकले ही थे कि दो अज्ञात हमलावरों ने उन पर हमला कर दिया और उन्हें घसीटते हुए गली में ले गए। एक आदमी ने कमरुल ज़िया साहिब को दबोच लिया और दूसरे ने उन पर चाकू के साथ वार शुरू कर दिए। आदरणीय कमरुल ज़िया साहिब ने अपने आप को बचाने की कोशिश की लेकिन उनकी छाती कंधे दिल और गर्दन पर चाकू के घाव आए। एक हमलावर ने गर्दन के पीछे चाकू से वार किया और चाकू शरीर में घुसी छोड़कर मौके से फरार हो गए। चोटों के आगे घुटने टेक कर मौके पर ही आप शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

स्वर्गीय शहीद परिवार में अहमदियत का आरम्भ उनके पड़दादा आदरणीय दौलत ख़ान साहिब के द्वारा हुआ था जिन्होंने औलख बैरी ज़िला गुरदासपुर से कादियान जाकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक हाथ पर बैअत कर के जमाअत अहमदिया में शामिल हुए थे। वफात के बाद बहश्ती मकबरा रबवा में दफन हैं। शहीद स्वर्गीय के दादा आदरणीय फतह मुहम्मद साहब भी अल्लाह तआला के फज़्ल से जन्मजात अहमदी थे। वह भी बहश्ती मकबरा रबवा में दफन हैं। पाकिस्तान की स्थापना के बाद यह परिवार हिजरत कर के कालीके नागरे ज़िला सियालकोट में आकर बसा। मरहूम शहीद का जन्म वहीं की है। फिर यह 1985 ई में कोट अब्दुल मालिक आ गए। स्वर्गीय शहीद ने बी.कॉम तक शिक्षा प्राप्त की कुछ समय विभिन्न दफतरों में नौकरी की। बाद में अपने घर से लगे कारोबार का आरम्भ किया। एक दुकान खोल ली। कारोबार की शुरूआत की। फोटो स्टेट व मोबाइल की दुकान बनाई। 2004 ई में उनकी शादी हुई। अनगिनत गुणों के मालिक थे। नेक, ईमानदार, नेक दिल, नेक सीरत, शरीफ़, मिलनसार, व्यक्तित्व के मालिक,

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 7 April 2016 Issue No. 5

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : (0091) 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

निहायत ईमानदार दिलेर और साहसी युवा थे। केंद्रीय मेहमानों की सेवा में आगे रहते। जमाअत की सेवाओं में भी हमेशा आगे रहे। प्रत्येक से ख़ुश मिज़ाजी से पेश आते थे। शहीद के भाई मज़हर अली साहिब बताते हैं कि नमाज़ों की अदायगी आमतौर और जुम्अ: की नमाज़ की अदायगी की विशेष करके व्यवस्था करते थे। शहीद मरहूम को नियमित रूप से जुम्अ: पढ़ते देखकर अन्य ग़ैर अहमदी दुकानदार भी अपनी दुकानें बंद करके जुम्अ अदा करने के लिए जाते थे और कहा करते थे कि अगर यह मिर्ज़ाई जुम्अ के वक्त दुकान बंद करके जा सकता है तो हमें भी जाना चाहिए। आप इसलिए भी कभी भी जुम्अ नहीं छोड़ते थे कि मेरी वजह से ग़ैर अहमदी लोग भी जुम्अ: के लिए जाते हैं।

आप की बीवी ने बताया कि पिछले महीने से शहीद मरहूम के व्यवहार में काफी बदलाव आया था और मेरा पहले से बढ़ के ख़याल रखते। किसी भी कठोर बात का भी बुरा नहीं मनाते थे। शहीद मरहूम अल्लाह तआला के फज़ल से मूसी थे और इस समय सैक्रेटरी इस्लाह व इरशाद के पद पर सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे थे। इसके अलावा भी विभिन्न ख़िदमत करते रहे इससे पहले विभिन्न जमाअत के पदों पर सेवा की तौफ़ीक़ पाई। जमाअत के सारे कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे। शहीद मरहूम को विरोध का सामना था और इसके बारे में पुलिस और प्रशासन को लिखित आवेदन भी दिया जा चुका था। 14 अगस्त 2012 ई को लगभग पांच सौ लोगों का जुलूस पुलिस की निगरानी में क़मरुल ज़िया साहिब के घर के बाहर इकट्ठा हुआ। विरोधियों के दबाव में एक पुलिस वाले ने दुकान के काउंटर पर चढ़कर तस्वीरें उतारनी शुरू कर दीं। दुकान के शटर पर लिखे हुए। "वल्लाहो ख़ैरु राज़कीन" और कलमा-ए-तय्यबा को काला रंग फेर कर मिटा दिया। बाद में उस घर की दीवार पर "अलैसल्लाह बे काफिन अबदो" और "माशा अल्लाह" की तहरीरें भी छैनी हथौड़े से तोड़ दिया। अंत में घर के बाहर लगी नाम वाली पट्टिका जो क़मरुल ज़िया साहिब के बाप का नाम मुहम्मद अली लिखा था इस से मुहम्मद भी छैनी हथौड़े से तोड़ दिया गया। यह तो उन लोगों की हालत है, सिवाय इसके कि उसके उन पर इन्ना लिल्लाह पढ़ा जाए और क्या किया जा सकता है।

इसी तरह 26 जनवरी 2014 ई को चालीस से पचास मौलवियों के एक जुलूस ने क़मरुल ज़िया साहब को उनकी दुकान से ज़बरदस्ती बाहर निकालकर अत्याचार करने के अलावा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर का अपमान किया और अभद्र शब्दों का प्रयोग करते रहे। इस दौरान पुलिस मौके पर पहुंच कर कमरुल ज़िया साहिब को थाने ले गई लेकिन बाद में विरोधियों के ख़िलाफ बिना किसी कार्रवाई के मामला रफा-दफा करवा दिया। तो यह प्रतिकूल हालत थी। धमकियां उन को स्थायी मिलती थीं। इसलिए उनका मानना था कि शायद विदेश चले जाएं लेकिन अल्लाह तआला ने शहादत का रुतबा प्रदान किया और अपने पास बुला लिया।

स्वर्गीय शहीद ने पीछे रहने वालों में दो भाई और दो बहनों के अलावा पिता आदरणीय मुहम्मद अली साहिब पत्नी रूबी कमर साहिबा तीन बच्चे हुज़ैफा अहमद उम्र दस साल, बेटी अमतुल मतीन उम्र सात साल और एक दूसरी बेटी अमतुल हादी उम्र चार साल छोड़े हैं। अल्लाह तआला हमारे इस शहीद भाई के स्तर को ऊंचा करे अपनी रज़ा की जन्नतों में हमेशा उनके दर्जे बुलंद फरमाता चला जाए और जन्नत की नेअमतों से सम्मानित करे। अपने प्यारों के कुरब में जगह दे।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

जामिआ अहमदिया कादियान में वर्ष 2016 ई. के लिए प्रवेश

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1906 ई. में शाखे दीनीयात की स्थापना की थी जो बाद में जामिआ अहमदिया कहलाया। इस मदरसा की स्थपना का उद्देश्य धार्मिक विद्वान एवं मुबल्लिग़ीन तैयार करना था। पिछले 110 वर्षों से इस जामिआ से सैकड़ों विद्वान और मुबल्लिग़ीन शिक्षा प्राप्त करके भारत एवं भारत से बाहर तबलीग़(धर्म प्रचार) का फ़र्ज़ अदा कर चुके हैं और अल्हम्दो लिल्लाह अब भी कर रहे हैं और इन्शा अल्लाह तआला यह सिलसिला जारी रहेगा। इस सिलसिले को जारी रखने के लिए प्रत्येक वर्ष जामिआ अहमदिया में छात्रों का प्रवेश किया जाता है। अत: प्रवेश के लिए निम्नलिखित पते पर पत्र लिख कर जामिआ अहमदिया से प्रवेश परीक्षा का फार्म और pattern और model papers मंगवा लें और अपने क्षेत्र के मुबल्लिग़ या मुअल्लिम साहिब से pattern के अनुसार अच्छी तैयारी कर लें। प्रवेश की शर्तें यह हैं:

1. उम्मीदवार कम से कम दसवीं पास होना चाहिए।

2. प्रवेश फार्म को पूर्ण रूप से भर कर 15 जूलाई 2016 ई. तक प्रिसिंपल जामिआ अहमदिया कादियान को रजिस्ट्री डाक द्वारा पहुंचा दें। जामिआ अहमदिया में फार्म को चेक करने के बाद उम्मीदवार छात्र को कादियान आने की लिखित अथवा फोन द्वारा सूचना दे दी जाएगी। सूचना मिलने के वाद 1 अगस्त 2016 तक कादियान पहुंच जाएं।

3. दसवीं पास छात्र के लिए आयु की सीमा 17 वर्ष और इण्टर पास के लिए आयु की सीमा 19 वर्ष है। आयु की सीमा में हाफिज़ों के लिए छूट दी जा सकती है।

4. प्रवेश के लिए उम्मीदवार छात्र की 4 अगस्त 2016 ई. जुम्मेरात के दिन सुबह 9.00 बजे जामिआ अहमदिया कादियान में लिखित परिक्षा होगी। जिस में पवित्र कुर्आन,हदीस,इस्लाम व अहमदियत,दीनी मालूमात,अरबी,उर्दू,गणित,इंगलिश और सामान्य ज्ञान आदि के संक्षिप्त प्रश्न होंगे। लिखित परीक्षा में सफल होने वाले छात्र का साक्षात्कार (interview) होगा। जिस में कुर्आन करीम नाज़रा,उर्दू की कोई पुस्तक और इंग्लिश अख़बार पढ़ना होगा। इसी तरह,दीनी मालूमात और सामान्य ज्ञान और छात्र की रुचि जानने के लिए प्रश्न किए जाएंगे।

5. साक्षात्कार (interview) में सफल होने वाले छात्रों का नूर अस्पताल में Medical Check Up होगा। जिन उम्मीदवारों की मैडिकल रिपोर्ट संतोषजनक होगी उन्हे जामिआ अहमदिया में नियमानुसार प्रवेश दिया जाएगा। अगर इसके बाद कभी भी किसी छात्र ने जामिआ की पढ़ाई में अरुचि दिखाई या जामिआ के होस्टल के नियमों की उल्लंघना करने की कोशिश की तो उसे जामिआ से निकाल दिया जाएगा।

6. जिन छात्रों का दाखिला फार्म ठीक न पाया जाए या लिखित परीक्षा में पास न हो सकें या मेडिकल टेस्ट में अन फिट हों उन छात्रों को अपने खर्च पर वापस जाना होगा

7.जमाअत के अमीरों ,सदरों, मुबल्लिग़ों और मुअल्लिमों से निवेदन है कि अच्छे और योग्य उल्मा एवं मुबल्लिग़ बनाने के लिए तेज़ दिमाग़,योग्य और धार्मिक सेवा की भावना रखने वाले और नेकी की तरफ़ प्रवृत छात्रों का चुनाव करके उन्हें प्रवेश के पाठय क्रम (pattern) का अच्छी तरह तैयारी करवा कर निर्धारित तिथि को कादियान पहुंचा दें। जज़ाकमुल्लाह अहसनल ज़ज़ा

सम्पर्क नम्बर: 01872-500102,09646934736,09463324783
E-mail: jaqadian@gmail.com

नोट:- (1)प्रवेश फार्म में उम्मीदवार छात्र अपना टेलीफ़ोन या मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें इसी तरह अपनी जमाअत के सदर साहिब का टैलीफ़ोन या मोबाइल नम्बर भी लिखें।(2)ई मेल में अपना निवेदन भिजवाने के साथ डाक के द्वारा भी अपनी दर्ख़वास्त भिजवाएं।

प्रिसिंपल जामिआ अहमदिया कादियान

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badr, at Fazle-Umar Printing Press Qadian, Harchowal Road Po. Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab, India. Editor Shaikh Mujahid Ahmad